पारायण-विधि

श्रीरामचरितमानसका विधिपूर्वक पाठ करनेवाले महानुभावों-को पाठारम्भके पूर्व श्रीतुलसीदासजी, श्रीवाल्मीकिजी, श्रीशिवजी तथा श्रीहनुमान्‌जीका आवाहन-पूजन करनेके पश्चात् तीनों भाइयोंसहित श्रीसीतारामजीका आवाहन, षोडशोपचार पूजन और ध्यान करना चाहिये। तदनन्तर पाठका आरम्भ करना चाहिये। सबके आवाहन, पूजन और ध्यानके मन्त्र क्रमशः नीचे लिखे जाते हैं—

अथ आवाहनमन्त्रः

तुलसीक नमस्तुभ्यमिहागच्छ शुचिव्रत।
नैर्ऋत्य उपविश्येदं पूजनं प्रतिगृह्यताम्॥ १॥

ॐ तुलसीदासाय नमः

श्रीवाल्मीक नमस्तुभ्यमिहागच्छ शुभप्रद।
उत्तरपूर्वयोर्मध्ये तिष्ठ गृह्णीष्व मेऽर्चनम्॥ २॥

ॐ वाल्मीकाय नमः

गौरीपते नमस्तुभ्यमिहागच्छ महेश्वर।
पूर्वदक्षिणयोर्मध्ये तिष्ठ पूजां गृहाण मे॥ ३॥

ॐ गौरीपतये नमः

श्रीलक्ष्मण नमस्तुभ्यमिहागच्छ सहप्रियः।
याम्यभागे समातिष्ठ पूजनं संगृहाण मे॥ ४॥

ॐ श्रीसपत्नीकाय लक्ष्मणाय नमः

श्रीशत्रुघ्न नमस्तुभ्यमिहागच्छ सहप्रियः॥
पीठस्य पश्चिमे भागे पूजनं स्वीकुरुष्व मे॥ ५॥

ॐ श्रीसपत्नीकाय शत्रुघ्नाय नमः

श्रीभरत नमस्तुभ्यमिहागच्छ सहप्रियः।
पीठकस्योत्तरे भागे तिष्ठ पूजां गृहाण मे॥ ६॥

ॐ श्रीसपत्नीकाय भरताय नमः

श्रीहनुमन्नमस्तुभ्यमिहागच्छ कृपानिधे।
पूर्वभागे समातिष्ठ पूजनं स्वीकुरु प्रभो॥ ७॥

ॐ हनुमते नमः

अथ प्रधानपूजा च कर्तव्या विधिपूर्वकम्।
पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा तु ध्यानं कुर्यात्परस्य च॥ ८॥

रक्ताम्भोजदलाभिरामनयनं पीताम्बरालङ्कृतं
श्यामाङ्गं द्विभुजं प्रसन्नवदनं श्रीसीतया शोभितम्।
कारुण्यामृतसागरं प्रियगणैर्भ्रात्रादिभिर्भावितं
वन्दे विष्णुशिवादिसेव्यमनिशं भक्तेष्टसिद्धिप्रदम्॥ ९॥

आगच्छ जानकीनाथ जानक्या सह राघव।
गृहाण मम पूजां च वायुपुत्रादिभिर्युतः॥ १०॥

इत्यावाहनम्

सुवर्णरचितं राम दिव्यास्तरणशोभितम्।
आसनं हि मया दत्तं गृहाण मणिचित्रितम्॥ ११॥

इति षोडशोपचारैः पूजयेत्

ॐ अस्य श्रीमन्मानसरामायणश्रीरामचरितस्य श्री-शिवकाकभुशुण्डियाज्ञवल्क्यगोस्वामितुलसीदासा ऋषयः श्रीसीतारामो देवता श्रीरामनाम बीजं भवरोगहरी भक्तिःशक्तिः मम नियन्त्रिताशेषविघ्नतया श्रीसीतारामप्रीतिपूर्वकसकल-मनोरथसिद्ध्यर्थं पाठे विनियोगः॥

अथाचमनम्

श्रीसीतारामाभ्यां नमः। श्रीरामचन्द्राय नमः॥
श्रीरामभद्राय नमः।

इति मन्त्रत्रितयेन आचमनं कुर्यात्॥ श्रीयुगलबीज-मन्त्रेण प्राणायामं कुर्यात्॥

अथ करन्यासः

जग मंगल गुनग्राम राम के। दानि मुकुति धन धरम धाम के॥

अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

राम राम कहि जे जमुहाहीं। तिन्हहि न पापपुंज समुहाहीं॥

तर्जनीभ्यां नमः

राम सकल नामन्ह ते अधिका। होउ नाथ अघ खग गन बधिका॥

मध्यमाभ्यां नमः

उमा दारु जोषित की नाईं। सबहि नचावत रामु गोसाईं॥

अनामिकाभ्यां नमः

सन्मुख होइ जीव मोहि जबहीं। जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं॥

कनिष्ठिकाभ्यां नमः

मामभिरक्षय रघुकुलनायक। धृत वर चाप रुचिर कर सायक॥

करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

इति करन्यासः

अथ हृदयादिन्यासः

जग मंगल गुनग्राम राम के । दानि मुकुति धन धरम धाम के ॥
हृदयाय नमः ॥

राम राम कहि जे जमुहाहीं । तिन्हहि न पापपुंज समुहाहीं ॥
शिरसे स्वाहा ॥

राम सकल नामन्ह ते अधिका । होउ नाथ अघ खग गन बधिका ॥
शिखायै वषट् ॥

उमा दारु जोषित की नाईं । सबहि नचावत रामु गोसाईं ॥
कवचाय हुम् ॥

सन्मुख होइ जीव मोहि जबहीं । जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं ॥
नेत्राभ्यां वौषट् ॥

माममिरक्षय रघुकुलनायक । धृत वर चाप रुचिर कर सायक ॥
अस्त्राय फट् ॥

इति हृदयादिन्यासः

अथ ध्यानम्

मामवलोकय पंकजलोचन । कृपा बिलोकनि सोच बिमोचन ॥
नील तामरस स्याम काम अरि । हृदय कंज मकरंद मधुप हरि ॥
जातुधान बरूथ बल भंजन । मुनि सज्जन रंजन अघ गंजन ॥
भूसुर ससि नव वृंद बलाहक । असरन सरन दीन जन गाहक ॥
भुजबल बिपुल भार महिखंडित । खर दूषन बिराध बध पंडित ॥
रावनारि सुखरूप भूपबर । जय दसरथ कुल मुकुद सुधाकर ॥
सुजस पुरान बिदित निगमागम । गावत सुर मुनि संत समागम ॥
करुनीक ब्यलीक मद खंडन । सब बिधि कुसल कोसला मंडन ॥
कलि मल मथन नाम ममताहन । तुलसिदास प्रभु पाहि प्रनत जन ॥

इति ध्यानम्

अब प्रेमी पाठकर्ता महानुभावोंकी जानकारी और सुविधाके लिये नीचेके कोष्ठकोंमें मानसके नवाह्निक, मासिक एवं द्विमासिक पाठोंके विरामस्थल काण्ड और दोहोंकी संख्यासहित लिखे जा रहे हैं—

नवाह्निक	मासिक	द्विमासिक	विरामोंके स्थान*	संख्या
...	...	१	सपनेहुँ साचेहुँ मोहिं पर जौं हर गौरि पसाउ ...	बा० १५
...	१	...	ब्रह्म राम तें नामु बड़ बरदायक बरदानि ...	,, २५
...	...	२	जस मानस जेहि बिधि भयउ जग प्रचार जेहि हेतु ...	,, ३५
...	...	३	लाग न उर उपदेसु जदपि कहेउ सिवँ बार बहु ...	,, ५१
...	२	...	गईं समीप महेस तब हँसि पूछी कुसलात ...	,, ५५
...	...	४	सुनहि मातु मैं दीख अस सपन सुनावउँ तोहि ...	,, ७२
...	३	...	कहा हमार न सुनेहु तब नारद कें उपदेस ...	,, ८९
...	...	५	नाचहिं गावहिं गीत परम तरंगी भूत सब ...	,, ९३
...	...	६	बंदउँ पद धरि धरनि सिरु बिनय करउँ कर जोरि ...	,, १०९
१	४	...	हियँ हरषे कामारि तब संकर सहज सुजान ...	,, १२०(क)
...	...	७	बिरचेउ मग महुँ नगर तेहिं सत जोजन बिस्तार ...	,, १२९
...	...	८	श्रवन सुधासम बचन सुनि पुलक प्रफुल्लित गात ...	,, १४५
...	५	...	यह इतिहास पुनीत अति उमहि कही बृषकेतु ...	,, १५२
...	...	९	तुलसी जसि भवतब्यता तैसी मिलइ सहाइ ...	,, १५९(ख)
...	...	१०	छुधाछीन बलहीन सुर सहजेहिं मिलिहहिं आइ ...	,, १८१
...	६	...	बरनि न जाइ अनीति घोर निसाचर जो करहिं ...	,, १८३
...	७	...	अस प्रभु दीनबंधु हरि कारन रहित दयाल ...	,, २११
...	...	११	रिषय संग रघुबंसमनि करि भोजनु बिश्रामु ...	,, २१७
...	...	१२	केहरि कटि पट पीत धर सुषमा सील निधान ...	,, २३३

* जिन दोहों, सोरठों या चौपाइयों या श्लोकोंपर विराम है, उनकी पहली पंक्ति या पहले चरण ही यहाँ दिये गये हैं। पाठ इनके अन्तिम चरणपर समाप्त होते हैं।

नवाह्निक	मासिक	द्विमासिक	विरामोंके स्थान		संख्या
...	२	८	...	सतानंद पद बंदि प्रभु बैठे गुर पहिं जाइ	बा० २३९
...	...	...	१३	राजत राजसमाज महुँ कोसलराज किसोर	... ,, २४२
...	...	...	१४	उदित उदयगिरि मंच पर रघुबर बालपतंग	... ,, २५४
...	...	...	१५	अरुन नयन भृकुटी कुटिल चितवत नृपन्ह सकोप	... ,, २६७
...	...	९	...	सभय बिलोके लोग सब जानि जानकी भीरु	... ,, २७०
...	...	...	१६	बसइ नगर जेहिं लच्छि करि कपट नारि बर बेषु	... ,, २८९
...	...	१०	...	आवत जानि बरात बर सुनि गहगहे निसान	... ,, ३०४
...	...	...	१७	कहहिं परस्पर नारि बारि बिलोचन पुलक तन	... ,, ३११
...	...	...	१८	मुदित अवधपति सकल सुत बधुन्ह समेत निहारि	... ,, ३२५
...	...	११	...	पुनि पुनि रामहि चितव सिय सकुचति मन सकुचै न	... ,, ३२६
...	...	...	१९	बीच बीच बर बास करि मग लोगन्ह सुख देत	... ,, ३४३
...	३	...	...	कीन्ह सौच सब सहज सुचि सरित पुनीत नहाइ	... ,, ३५८
...	...	१२	२०	सिय रघुबीर बिवाहु जे सप्रेम गावहिं सुनहिं	... ,, ३६१
...	...	...	२१	तेहि अवसर आए लखन मगन प्रेम आनंद	... अयो० १०
...	...	१३	...	भूप मनोरथ सुभग बनु सुख सुबिहंग समाजु	... ,, २८
...	...	...	२२	द्वार भीर सेवक सचिव कहहिं उदित रबि देखि	... ,, ३७
...	...	...	२३	यह बिचारि नहिं करउँ हठ झूठ सनेहु बढ़ाइ	... ,, ५६
...	...	१४	...	कहि प्रिय बचन बिबेकमय कीन्हि मातु परितोष	... ,, ६०
...	...	...	२४	मातु चरन सिरु नाइ चले तुरत संकित हृदयँ	... ,, ७५
...	...	१५	२५	भगत भूमि भुसुर सुरभि सुर हित लागि कृपाल	... ,, ९३
...	...	...	२६	बिदा किए बटु बिनय करि फिरे पाइ मनकाम	... ,, १०९
...	४	१६	...	स्यामल गौर किसोर बर सुंदर सुषमा ऐन	... ,, ११६
...	...	...	२७	राम सरूप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धिपर	... ,, १२६
...	...	१७	...	लखन जानकी सहित प्रभु राजत रुचिर निकेत	... ,, १३३
...	...	...	२८	राम लखनु सीता सहित सोहत परन निकेत	... ,, १४१
...	...	...	२९	भरतहि बिसरेउ पितुमरन सुनत राम बनगौनु	... ,, १६०
...	..	१८	...	भरतु कमल कर जोरि धीरधुरंधर धीर धरि	... ,, १७६
...	...	...	३०	अवसि चलिअ बन रामु जहँ भरत मंत्रु भल कीन्ह	... ,, १८४
...	...	...	३१	भरत तीसरे पहर कहँ कीन्ह प्रबेसु प्रयाग	... ,, २०३
...	...	...	३२	राम बिरहँ ब्याकुल भरतु सानुज सहित समाज	... ,, २१३
...	...	१९	...	संपति चकई भरतु चक मुनि आयसु खेलवार	... ,, २१५
...	५	२०	३३	रामसैल सोभा निरखि भरत हृदयँ अति पेमु	... ,, २३६
...	...	...	३४	अंतरजामी रामु सिय तुम्ह सरबग्य सुजान	... ,, २५६
...	...	...	३५	गुर समाज भाइन्ह सहित राम राजु पुर होउ	... ,, २७३
...	...	...	३६	राम सत्यब्रत धरम रत सब कर सीलु सनेहु	... ,, २९२
...	...	...	३७	कहत कूप महिमा सकल गए जहाँ रघुराउ	... ,, ३१०

नवाह्निक	मासिक	द्विमासिक	विरामोंके स्थान	संख्या
...	...	२१	३८	भरत चरित करि नेमु तुलसी जो सादर सुनहिं ...	अयो० ३२६
...	...	...	३९	बचन कर्म मन मोरि गति भजनु करहिं निःकाम ...	अर० १६
...	...	...	४०	बिपुल सुमन सुर बरषहिं गावहिं प्रभु गुन गाथ ...	,, २७
...	६	...	...	हारि परा खल बहुबिधि भय अरु प्रीति देखाइ ...	,, २९(क)
...	...	२२	४१	दीपसिखा सम जुबति तन मन जनि होसि पतंग ...	,, ४६(ख)
...	...	...	४२	भूमि जीव संकुल रहे गए सरद रितु पाइ ...	कि० १७
...	...	२३	४३	नीलोत्पल तन स्याम काम कोटि सोभा अधिक ...	,, ३०(ख)
...	...	...	४४	देखि बुद्धि बल निपुन कपि कहेउ जानकीं जाहु ...	सु० १७
...	...	...	४५	एहि बिधि जाइ कृपानिधि उतरे सागर तीर ...	,, ३५
...	...	२४	४६	सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुनगान ...	,, ६०
...	७	...	...	कह हनुमंत सुनहु प्रभु ससि तुम्हार प्रिय दास ...	लं० १२(क)
...	...	...	४७	फूलइ फरइ न बेत जदपि सुधा बरषहिं जलद ...	,, १६(ख)
...	...	...	४८	रिपुबल धरषि हरषि कपि बालितनय बलपुंज ...	,, ३५(क)
...	...	२५	...	हिरन्याच्छ भ्राता सहित मधु कैटभ बलवान ...	,, ४८(क)
...	...	...	४९	कृपादृष्टि कपि भालु बिलोके ...	,, ५१ । ४
...	...	...	५०	निसिचर अधम मलाकर ताहि दीन्ह निज धाम ...	,, ७१
...	...	...	५१	बहुरि राम सब तन चितइ बोले बचन गँभीर ...	,, ८९
...	...	२६	...	मुरुछा बिगत भालु कपि सब आए प्रभु पास ...	,, ९८
...	...	...	५२	प्रभु के बचन श्रवन सुनि नहिं अघाहिं कपिपुंज ...	,, १०६
...	...	२७	५३	यह कलिकाल मलायतन मन करि देखु बिचार ...	,, १२१(ख)
...	८	...	...	जहँ तहँ धावन पठइ पुनि मंगल द्रब्य मगाइ ...	उ० १०(ख)
...	...	...	५४	बिधु महि पूर मयूखन्हि रबि तप जेतनेहिं काज ...	,, २३
...	...	...	५५	उमा अवधबासी नर नारि कृतारथरूप ...	,, ४७
...	...	२८	...	ग्यानी भगत सिरोमनि त्रिभुवनपति कर जान ...	,, ६२(क)
...	...	...	५६	सदा कृतारथरूप तुम्ह कह मृदु बचन खगेस ...	,, ६३(ख)
...	...	...	५७	सोई सुख लवलेस जिन्ह बारक सपनेहुँ लहेउ ...	,, ८८(ख)
...	...	...	५८	हरिमाया कृत दोष गुनु बिनु हरिभजन न जाहिं ...	,, १०४(क)
...	...	२९	...	ताते यह तन मोहि प्रिय भयउ रामपद नेह ...	,, ११४(क)
...	...	...	५९	यह रहस्य रघुनाथ कर बेगि न जानइ कोइ ...	,, ११६(क)
...	९	३०	६०	पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं ...	अन्तिम श्लोक

श्रीरामचरितमानसके प्रकाण्ड पण्डित पूज्यपाद परमहंस श्रीअवधविहारीदासजी महाराज (श्रीनागबाबाजी महाराज) के मतसे नवाह्निक, मासिक, द्विमासिक एवं त्रैमासिक पाठोंके विरामस्थल कुछ और हैं। अतः उनके मान्यतानुसार चारों प्रकारके पाठोंके विरामस्थलोंका उल्लेख अगले पृष्ठमें किया जा रहा है। पाठकर्ता महानुभाव इन विरामस्थलोंके अनुसार भी पाठ कर सकते हैं—

नवार्धिक	मासिक	द्विमासिक	त्रैमासिक	विरामोंके स्थान	संख्या
...	...	...	१	देव दनुज नर नाग खग प्रेत पितर गंधर्व	... बा० ७ (घ)
...	...	१	...	अति अपार जे सरित बर जौं नृप सेतु कराहिं	... ,, १३
...	...	...	२	सपनेहुँ साचेहुँ मोहि पर जौं हर गौरि पसाउ	... ,, १५
...	१	२	३	एहि बिधि निज गुन दोष कहि सबहि बहुरि सिरु नाइ	... ,, २९(ग)
...	...	...	४	जस मानस जेहि बिधि भयउ जग प्रचार जेहि हेतु	... ,, ३५
...	...	३	५	कहउँ सो मति अनुहारि अब उमा संभु संबाद	... ,, ४७
...	२	४	६	सदा सुमन फल सहित सब द्रुम नव नाना जाति	... ,, ६५
...	...	...	७	तुम्ह माया भगवान् सिव सकल जगत पितु मातु	... ,, ८१
...	...	५	...	हियँ हरषे मुनि बचन सुनि देखि प्रीति बिस्वास	... ,, ९०
...	...	...	८	जगदंबा जहँ अवतरी सो पुरु बरनि कि जाइ	... ,, ९४
...	३	६	९	चरित सिंधु गिरिजा रमन बेद न पावहिं पारु	... ,, १०३
...	...	...	१०	रामकृपा तें पारबति सपनेहुँ तव मन माहिं	... ,, ११२
१	...	...	...	हियँ हरषे कामारि तब संकर सहज सुजान	... ,, १२०(क)
...	...	७	११	बोले बिहसि महेस तब ग्यानी मूढ़ न कोइ	... ,, १२४(क)
...	४	८	१२	सुर नर मुनि कोउ नाहिं जेहि न मोह माया प्रबल	... ,, १४०
...	...	...	१३	यह इतिहास पुनीत अति उमहि कही बृषकेतु	... ,, १५२
...	...	९	...	तुलसी जसि भवतब्यता तैसी मिलइ सहाइ	... ,, १५९(ख)
...	...	...	१४	जरा मरन दुख रहित तनु समर जितै जनि कोउ	... ,, १६४
...	५	१०	१५	उपजे जदपि पुलस्त्य कुल पावन अमल अनूप	... ,, १७६
...	...	...	१६	निज लोकहि बिरंचि गे देवन्ह इहइ सिखाइ	... ,, १८७
...	...	११	...	तब अदृस्य भए पावक सकल सभहि समुझाइ	... ,, १८९
...	...	...	१७	ब्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुन बिगत बिनोद	... ,, १९८
...	६	१२	१८	आयुध सर्ब समर्पि कै प्रभु निज आश्रम आनि	... ,, २०९
...	...	१३	१९	उठे लखनु निसि बिगत सुनि अरुनसिखा धुनि कान	... ,, २२६
२	...	...	२०	सतानंद पद बंदि प्रभु बैठे गुर पहिं जाइ	... ,, २३९
...	७	१४	२१	बोले बंदी बचन बर सुनहु सकल महिपाल	... ,, २४९
...	...	...	२२	बंदी मागध सूत गन बिरुद बदहिं मति धीर	... ,, २६२
...	...	१५	...	रघुबर उर जयमाल देखि देव बरिसहिं सुमन	... ,, २६४
...	...	...	२३	गाधिसूनु कह हृदयँ हँसि मुनिहि हरिअरइ सूझ	... ,, २७५
...	८	१६	२४	बसइ नगर जेहिं लच्छि करि कपट नारि बर बेषु	... ,, २८९
...	...	...	२५	सिधि सब सिय आयसु अकनि गईं जहाँ जनवास	... ,, ३०६
...	...	१७	...	कहहिं परस्पर नारि बारि बिलोचन पुलक तन	... ,, ३११
...	...	...	२६	नाऊ बारी भाट नट राम निछावरि पाइ	... ,, ३१९
...	९	१८	२७	मुदित अवधपति सकल सुत बधुन्ह समेत निहारि	... ,, ३२५
...	...	...	२८	रूपसिंधु सब बंधु लखि हरषि उठा रनिवासु	... ,, ३३५
...	...	१९	...	बीच-बीच बर बास करि मग लोगन्ह सुख देत	... ,, ३४३
...	...	...	२९	एहि बिधि सबही देत सुखु आए राज दुआर	... ,, ३४८

नवाह्निक	मासिक	द्वैमासिक	त्रैमासिक	विरामोंके स्थान	संख्या
३	१०	...	...	राम प्रतोषी मातु सब कहि बिनीत बर बैन	बा० ३५७
...	...	२०	३०	सिय रघुबीर बिबाहु जे सप्रेम गावहिं सुनहिं	,, ३६१
...	...	२१	१	तेहि अवसर आए लखन मगन प्रेम आनंद	अ० १०
...	...	...	२	प्रमुदित पुर नर नारि सब सजहिं सुमंगलचार	,, २३
...	११	२२	३	द्वार भीर सेवक सचिव कहहिं उदित रबि देखि	,, ३७
...	...	...	४	नव गयंदु रघुबीर मनु राजु अलान समान	,, ५१
...	...	२३	...	कहि प्रिय बचन बिबेकमय कीन्हि मातु परितोष	,, ६०
...	...	...	५	मातु पिता गुरु स्वामि सिख सिर धरि करहिं सुभायँ	,, ७०
...	१२	२४	६	बालक बृद्ध बिहाइ गृहँ लगे लोग सब साथ	,, ८४
...	...	...	७	भगत भूमि भूसुर सुरभि सुर हित लागि कृपाल	,, ९३
...	...	२५	...	प्राननाथ देवर सहित कुसल कोसला आइ	,, १०३
...	...	...	८	करम बचन मन छाड़ि छलु जब लगि जनु न तुम्हार	,, १०७
...	१३	२६	९	जिन्ह जिन्ह देखे पथिक प्रिय सिय समेत दोउ भाइ	,, १२३
...	...	...	१०	चित्रकूट के बिहग मृग बेलि बिटप तृन जाति	,, १३८
४	...	२७	...	रामु लखन सीता सहित सोहत परन निकेत	,, १४१
...	...	...	११	राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम	,, १५५
...	१४	२८	१२	सिंघासन भूषन बसन अन्न धरनि धन धाम	,, १७०
...	...	२९	१३	पय अहार फल असन एक निसि भोजन एक लोग	,, १८८
...	...	...	१४	करत दंडवत देखि तेहि भरत लीन्ह उर लाइ	,, १९३
...	१५	३०	१५	तनु पुलकेउ हियँ हरषु सुनि बेनि बचन अनुकूल	,, २०५
...	...	...	१६	रघुबर बरन बिलोकि बर बारि समेत समाज	,, २२०
...	...	१	...	भरत प्रेमु तेहि समय जस तस कहि सकइ न सेषु	,, २२५
...	...	...	१७	लगे होन मंगल सगुन सुनि गुनि कहत निषादु	,, २३४
...	१६	२	१८	बिहरत बन चहुँ ओर प्रतिदिन प्रमुदित लोग सब	,, २५१
...	...	...	१९	तब मुनि बोले भरत सन सब सँकोचु तजि तात	,, २५९
...	...	३	...	प्रभु प्रसन्न मन सकुच तजि जो जेहि आयसु देब	,, २६९
...	...	...	२०	गुर समाज भाइन्ह सहित राम राजु पुर होउ	,, २७३
...	१७	४	२१	बार बार मिलि भेंटि सिय बिदा कीन्हि सनमानि	,, २८७
...	...	...	२२	सुहृद सुजान सुसाहिबहि बहुत कहब बड़ि खोरि	,, ३००
५	...	५	...	भरत राम संबादु सुनि सकल सुमंगल मूल	,, ३०८
...	...	...	२३	देखे थल तीरथ सकल भरत पाँच दिन माझ	,, ३१२
...	१८	६	२४	भरत चरित करि नेमु तुलसी जो सादर सुनहिं	,, ३२६
...	...	७	२५	निसिचर हीन करउँ महि भुज उठाइ पन कीन्ह	अर० ९
...	१९	८	२६	हरषित बरषहिं सुमन सुर बाजहिं गगन निसान	,, २०(ख)
...	...	९	२७	कंद मूल फल सुरस अति दिएँ राम कहुँ आनि	,, ३४
...	२०	१०	२८	दीपसिखा सम जुबति तन मन जनि होसि पतंग	,, ४६(ख)
...	...	११	२९	प्रथमहिं देवन्ह गिरिगुहा राखेउ रुचिर बनाइ	कि० १२

नवाहिक	मासिक	द्विमासिक	त्रैमासिक	विरामोंके स्थान	संख्या
६	२१	१२	३०	नीलोत्पल तन स्याम काम कोटि सोभा अधिक	... कि० ३० (ख)
...	...	१३	१	देखि बुद्धि बल निपुन कपि कहेउ जानकीं जाहु	... ० १७
...	२२	...	...	जनकसुतहि समुझाइ करि बहुबिधि धीरजु दीन्ह	... ,, २७
...	...	१४	२	एहि बिधि जाइ कृपानिधि उतरे सागर तीर	... ,, ३५
...	२३	१५	३	सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान	... ,, ६०
...	...	...	४	एहि बिधि कृपा रूप गुन धामु रामु आसीन	... लं० ११(क)
...	...	१६	...	फूलइ फरइ न बेत जदपि सुधा बरषहिं जलद	... ,, १६(ख)
...	...	...	५	जथा मत्त गज जूथ महुँ पंचानन चलि जाइ	... ,, १९
...	...	...	६	तरकि पवनसुत कर गहे आनि धरे प्रभु पास	... ,, ३२(क)
...	...	१७	...	रिपुबल धरषि हरषि कपि बालितनय बलपुंज	... ,, ३५(क)
...	२४	...	७	परम चतुरता श्रवन सुनि बिहँसे रामु उदार	... ,, ३८(ख)
...	...	१८	८	मेघनाद सुनि श्रवन अस गढ़ पुनि छेंका आइ	... ,, ४९
७	...	...	९	बचन कर्म मन कपट तजि भजहु राम रनधीर	... ,, ६४
...	...	१९	१०	खगपति सब धरि खाए माया नाग बरूथ	... ,, ७४ (क)
...	...	...	११	निज दल बिचलत देखेहि बीस भुजाँ दस चाप	... ,, ८१
...	२५	...	...	जग्य बिधंसि कुसल कपि आए रघुपति पास	... ,, ८५
...	...	२०	१२	बहुरि राम सब तन चितइ बोले बचन गँभीर	... ,, ८९
...	...	...	१३	मुरुछा बिगत भालु कपि सब आए प्रभु पास	... ,, ९८
...	...	...	१४	कृपादृष्टि करि बृष्टि प्रभु अभय किए सुरबृंद	... ,, १०३
...	...	२१	१५	जनकसुता समेत प्रभु सोभा अमित अपार	... ,, १०९ (ख)
...	२६	२२	१६	यह कलिकाल मलायतन मन करि देखु बिचार	... ,, १२१ (ख)
...	...	...	१७	लछिमन अरु सीता सहित प्रभुहि बिलोकति मातु	... उ० ७
...	...	२३	१८	बरनि उमापति राम गुन हरषि गए कैलास	... ,, १४ (ख)
...	...	...	१९	बिधु महि पूर मयूखन्हि रबि तप जेतनेहिं काज	... ,, २३
...	२७	२४	...	रमानाथ जहँ राजा सो पुर बरनि कि जाइ	... ,, २९
८	...	...	२०	बार बार अस्तुति करि प्रेम सहित सिरु नाइ	... ,, ३५
...	...	२५	२१	नाथ एक बर मागउँ मोहि कृपा करि देहु	... ,, ४९
...	...	...	२२	अस कहि चले देवरिषि करत राम गुन गान	... ,, ५९
...	२८	२६	२३	श्रोता सुमति सुसील सुचि कथा रसिक हरिदास	... ,, ६९(ख)
...	...	...	२४	एक एक ब्रह्मांड महुँ रहउँ बरष सत एक	... ,, ८०(ख)
...	...	२७	...	अस बिचारि मतिधीर तजि कुतर्क संसय सकल	... ,, ९० (ख)
...	...	...	२५	भाव बस्य भगवान सुख निधान करुना भवन	... ,, ९२ (ख)
...	२९	२८	२६	हरिमाया कृत दोष गुन बिनु हरिभजन न जाहिं	... ,, १०४(क)
...	...	...	२७	गुर के बचन सुरति करि राम चरन मनु लाग	... ,, ११०(क)
...	...	२९	२८	यह रहस्य रघुनाथ कर बेगि न जानइ कोइ	... ,, ११६(क)
...	...	...	२९	विनिश्चितं वदामि ते न अन्यथा वचांसि मे	... ,, १२२(ग)
९	३०	३०	३०	पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं	... अन्तिम श्लोक